फ़ाउण्डेशनल स्टेज पर पढ़ना सिखाने की कुछ असरदार रणनीतियाँ

आकाश शांडिल्य

शिक्षकों के लिए यह जानना ज़रूरी है कि विद्यार्थी पढ़ना कैसे सीखते हैं। ख़ासकर तब, जब उनका ध्यान 'बुनियादी साक्षरता' (Foundational Literacy) पर हो। इस लेख में (माध्यम भाषा) (R1[i]) और दूसरी भाषा (R2[i]) के विद्यार्थियों में पढ़ने की कुशलता विकसित करने के लिए कुछ प्रभावी रणनीतियों को पहचानने का प्रयास किया गया है। इस उद्देश्य के लिए लेखक ने दो शिक्षिकाओं की शिक्षण विधियों का विश्लेषण किया है—एक हिन्दी पढ़ाती हैं और दूसरी अँग्रेज़ी। ये दोनों शिक्षिकाएँ अपने विद्यार्थियों को बुनियादी स्तर पर पढ़ना सिखाने में कामयाब रही हैं।

लेख में दो ख़ास शिक्षिकाओं द्वारा अपनाए गए तरीक़े बताए गए हैं, लेकिन इस तरह के प्रयास अन्य कक्षाओं में भी देखे जा सकते हैं जहाँ विद्यार्थी कम उम्र में ही पढ़ना और लिखना सीख जाते हैं। R1 और R2 में उनके द्वारा अपनाए गए तरीक़ों का प्रभाव, अलग-अलग भाषाओं पर काम कर रहे अन्य शिक्षकों के तरीक़ों के बीच समानता और अन्तर जानने से पता चलता है।

> **शिक्षिका विद्यार्थियों के पढ़ने के तरीक़ों पर बारीक़ी से ध्यान देती हैं। जहाँ विद्यार्थियों को परेशानी होती है, शिक्षिका उनकी सहायता करती हैं। वे उन्हें किताब और वर्कबुक में दिए गए छोटे-छोटे शब्द और वाक्यांशों का लेखन अभ्यास भी कराती हैं जिससे उनकी लेखन क्षमता का विकास होता है।**

केस स्टडी 1 : R1 (हिन्दी) की पढ़ाई

इस विद्यालय की कक्षा 1 में 7 विद्यार्थी हैं। इनमें 5 विद्यार्थी पढ़ सकते हैं। इसके अलावा, 2 प्री-प्राइमरी के बच्चे भी हैं जिनका अभी नामांकन नहीं है, लेकिन रोज़ विद्यालय आते हैं और उन्होंने छोटे-छोटे गद्यांशों को पढ़ना सीख लिया है। जब मैंने इस बारे में शिक्षिका से बात की, और देखा कि उन्होंने इन विद्यार्थियों को पढ़ना कैसे सिखाया, तब कक्षा में कुछ ख़ास तरीक़े और प्रक्रियाएँ देखने को मिलीं। शिक्षिका ने जो क़दम उठाए, उनसे कक्षा 1 के विद्यार्थियों को हिन्दी में छोटे-छोटे गद्यांश पढ़ने में मदद मिली।

मौखिक काम से शुरुआत

जब विद्यार्थी विद्यालय आना शुरू करते हैं तब पहले कुछ महीने शिक्षिका उनके साथ रोज़मर्रा के जीवन के बारे में हिन्दी में बातचीत करती हैं। इसके अलावा, वे उन्हें आसान कविताएँ और कहानियाँ सुनने-सुनाने में भी शामिल करती हैं। बोलचाल की भाषा में काम शुरू करने से विद्यार्थी हिन्दी भाषा के साथ सहज होने लगते हैं। एक महीने में, वे इन आसान कविताओं को याद कर सुनाने भी लग जाते हैं।

वर्णों से परिचय

लगभग एक महीने बाद, शिक्षिका विद्यार्थियों का परिचय वर्णमाला से कराती हैं। वे उनसे सभी वर्ण एक साथ लिखवाती व बुलवाती हैं, और उनका ध्यान कुछ ख़ास वर्णों की ध्वनियों तथा आकृतियों पर भी दिलाती हैं। इसके लिए वे मुख्य रूप से पाठ्यपुस्तक में दिए गए अभ्यासों का इस्तेमाल करती हैं।

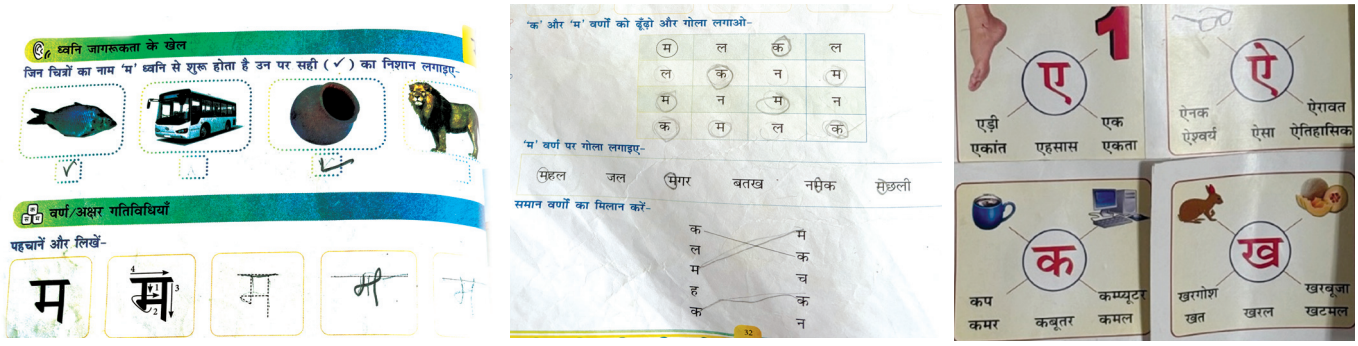

चित्र 1 : विशिष्ट अक्षरों और ध्वनियों पर आधारित अभ्यास

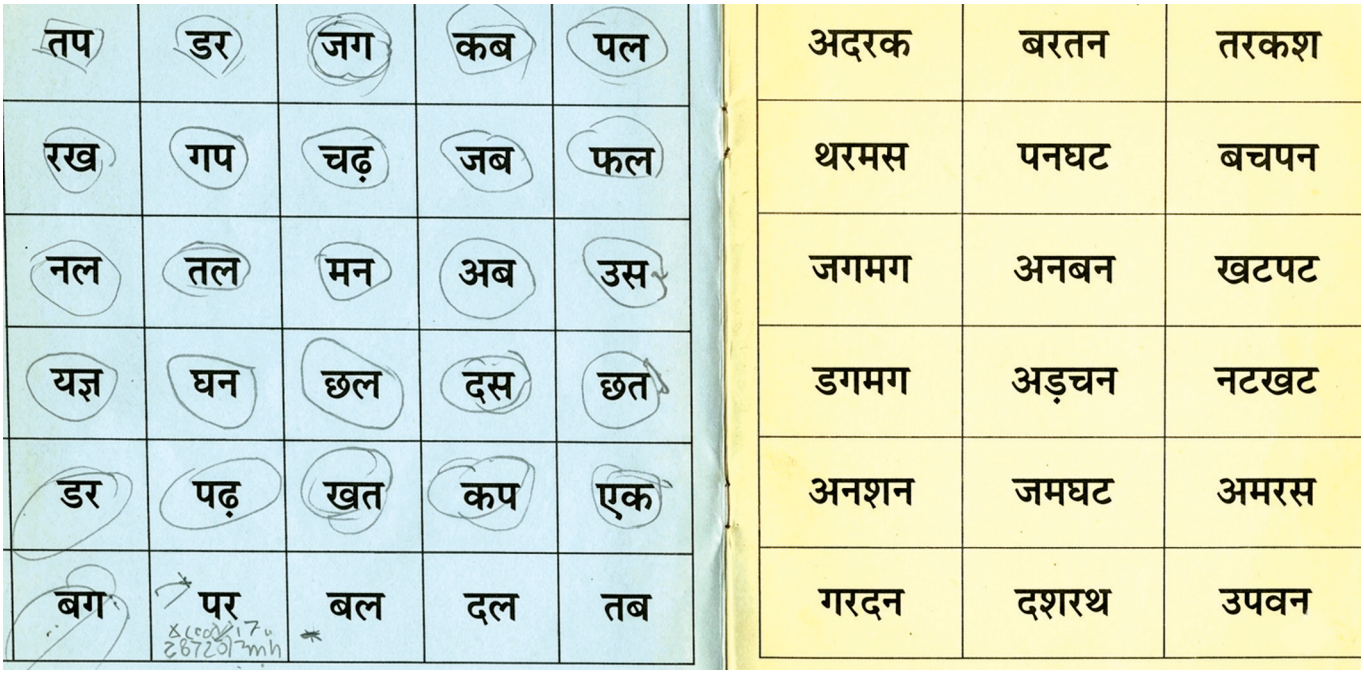

तप	डर	जग	कब	पल
रख	गप	चढ़	जब	फल
नल	तल	मन	अब	उस
यज्ञ	घन	छल	दस	छत
डर	पढ़	खत	कप	एक
बग	पर	बल	दल	तब

अदरक	बरतन	तरकश
थरमस	पनघट	बचपन
जगमग	अनबन	खटपट
डगमग	अड़चन	नटखट
अनशन	जमघट	अमरस
गरदन	दशरथ	उपवन

चित्र 2 : ध्वनियों को जोड़कर शब्द बनाने का अभ्यास करने के लिए लर्निंग किट

जब विद्यार्थी अक्षरों और उनसे जुड़ी ध्वनियों से अच्छी तरह से परिचित हो जाते हैं तब शिक्षिका उन्हें इन ध्वनियों को एक साथ मिलाने और आसान शब्दों को पढ़ने का अभ्यास कराती हैं। इसके लिए वे दीवार पर लगाई गई 'गतिविधि-आधारित अधिगम' किट में मौजूद सहायक सामग्री का उपयोग करती हैं। यह सामग्री विद्यार्थियों को दृश्य रूप से सीखने में मदद करती है। (चित्र 2)

वे विद्यार्थियों को टीएलएम का उपयोग करके मात्राओं से भी परिचित कराती हैं, और उनका ध्यान मात्राओं की बनावट तथा उनसे निकलने वाली ध्वनियों की तरफ़ आकर्षित करती हैं। उदाहरण के तौर पर, यदि शिक्षिका 'आ' (ा) की मात्रा के बारे में सिखा रही हैं तो वह उस विशेष मात्रा से जुड़े शब्दों का अभ्यास कराती हैं, और विद्यार्थियों को 'आ' की मात्रा की बनावट पर ध्यान देने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। वह उसी मात्रा से सम्बन्धित कई शब्दों का अभ्यास कराती हैं ताकि ध्वनि और प्रतीक के बीच के सम्बन्ध को और सघन बनाया जा सके।

इस अभ्यास के साथ ही, शिक्षिका विद्यार्थियों से बारी-बारी से पढ़ने के लिए भी कहती हैं ताकि वे ध्वनियों को प्रतीकों (मात्राओं) के साथ जोड़कर पढ़ने में माहिर हो जाएँ। वे उन मात्राओं या अक्षरों पर भी ध्यान देती रहती हैं जो बार-बार आते हैं। ऐसी मात्राओं की भी पहचान करती हैं जिन्हें पढ़ने में विद्यार्थियों को कठिनाई महसूस होती है।

पढ़ने का अभ्यास

जब विद्यार्थी अक्षरों, मात्राओं और उनसे बनने वाली ध्वनियों की अच्छी समझ विकसित कर लेते हैं और उन ध्वनियों को आपस में मिलाकर शब्दों को पढ़ने में सक्षम हो जाते हैं, तब उन्हें छोटे-छोटे गद्यांशों को ख़ुद से पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता है। शिक्षिका विद्यार्थियों के पढ़ने के तरीक़ों पर बारीक़ी से ध्यान देती हैं। जहाँ विद्यार्थियों को परेशानी होती है, शिक्षिका उनकी सहायता करती हैं। वे उन्हें किताब और वर्कबुक में दिए गए छोटे-छोटे शब्द और वाक्यांशों का लेखन अभ्यास भी कराती हैं जिससे उनकी लेखन क्षमता का विकास होता है। विद्यार्थियों को पढ़ने के स्तर के अनुसार किताबें चुनने और पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। कुछ चयनित किताबें कक्षा में भी रखी जाती हैं ताकि विद्यार्थी उन्हें अपनी सुविधानुसार आसानी से पढ़ सकें।

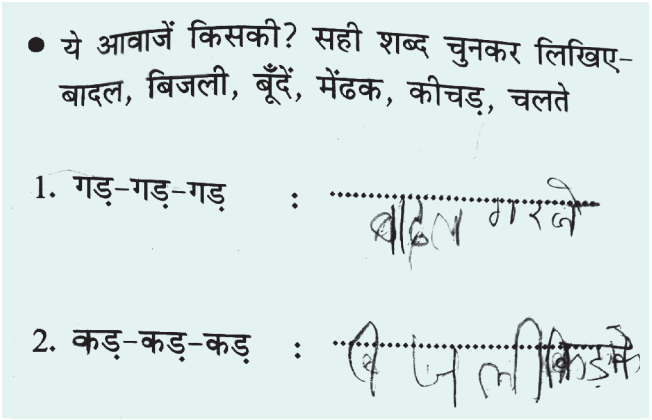

● ये आवाजें किसकी? सही शब्द चुनकर लिखिए-
बादल, बिजली, बूँदें, मेंढक, कीचड़, चलते

1. गड़-गड़-गड़ : .....

2. कड़-कड़-कड़ : .....

चित्र 3 : पाठ्यपुस्तक में दिए गए लिखने के शुरुआती अभ्यास

केस स्टडी 2 : R2 (अँग्रेज़ी) की पढ़ाई

शिक्षिका ने अगस्त में अपना कार्यभार सँभाला था। उस समय कक्षा के कुछ ही विद्यार्थी वर्णमाला के कुछ अक्षरों की पहचान करने में सक्षम थे। उनमें से कोई भी अक्षरों और उनकी ध्वनियों को आपस में जोड़कर नहीं पढ़ पाता था। अगले सात महीनों

में शिक्षिका ने कुछ विशेष प्रक्रियाओं और विधियों का पालन किया जिनके परिणामस्वरूप विद्यार्थी धीरे-धीरे पढ़ना सीखने में सफल रहे। ये सभी प्रक्रियाएँ एक निश्चित क्रम की बजाय, ज़्यादातर एक साथ ही चल रही थीं। कक्षा में नियमित आने वाले 9 विद्यार्थियों में से 7 अब छोटे-छोटे व्यंजन-स्वर-व्यंजन (CVC)[ii] गद्यांश आसानी से पढ़ पा रहे हैं।

> **विद्यार्थियों के लिए पूरे पाठ को एक ही बार में पढ़ना और समझ पाना सम्भव नहीं था, इसलिए शुरुआत में पढ़ने की समझ विकसित करने के बदले, शिक्षिका ने कुछ विशेष शब्दों, वाक्यांशों और अक्षरों की ध्वनियों पर अधिक बल दिया।**

थीम-आधारित योजना

शिक्षिका पाठ्यपुस्तक में मौजूद किसी एक विशेष विषय या थीम से सम्बन्धित कहानियों और कविताओं को समझाती हैं। इस प्रक्रिया में वे अँग्रेज़ी भाषा के कुछ विशेष शब्दों और वाक्यांशों का उपयोग करती हैं, तथा सुनिश्चित करती हैं कि दिक़्क़त होने पर विद्यार्थी अपनी मातृभाषा का सहारा ले सकते हैं। वे हाव-भाव और इशारों का भी प्रयोग करती हैं जिनसे उन्हें विषय को समझने में और आसानी होती है। पाठ्यपुस्तक सामग्री के साथ-साथ, शिक्षिका ने कई अन्य गतिविधियों को भी शामिल किया है। इन गतिविधियों का उद्देश्य विद्यार्थियों को अँग्रेज़ी के विशेष शब्दों और वाक्यांशों से परिचित कराना, उनकी समझ को विकसित करना, और इनका सही सन्दर्भ में उपयोग करना सिखाना है। उन्होंने धीरे-धीरे 'डिकोडिंग' के कौशल पर भी काम किया।

कविताओं, अभिवादनों और निर्देशों के माध्यम से मौखिक रूप से जानकारी देना

शुरुआती दौर में, शिक्षिका ने पाठ्यपुस्तक की किसी एक थीम पर आधारित शिक्षण योजना बनाई। उन्होंने थीम से जुड़ी बहुत सारी कविताओं, अभिवादनों और अँग्रेज़ी में दिए जाने वाले निर्देशों पर विशेष ध्यान दिया। विद्यार्थियों के लिए पूरे पाठ को एक ही बार में पढ़ना और समझ पाना सम्भव नहीं था, इसलिए शुरुआत में पढ़ने की समझ विकसित करने के बदले, शिक्षिका ने कुछ विशेष शब्दों, वाक्यांशों और अक्षरों की ध्वनियों पर अधिक बल दिया। लक्ष्य था कि विद्यार्थी इन विशिष्ट शब्दों और वाक्यांशों को पढ़ना, लिखना, समझना और बोलना सीख जाएँ। इन विषयों से सम्बन्धित अँग्रेज़ी के बुनियादी शब्द, यानी क्रिया शब्द, शरीर के अंगों के नाम, दिनों के नाम, आदि, कक्षा की प्रतिदिन की बातचीत में नियमित रूप से इस्तेमाल किए जाते थे। इस अभ्यास से विद्यार्थियों को अँग्रेज़ी में आवश्यक मौखिक शब्दावली विकसित करने में सहायता मिली।

चित्र 4 : कक्षा में प्रदर्शित कुछ सामान्य निर्देश और अभिवादन

प्रिंट और दृश्य पठन

शिक्षिका ने कक्षा की दीवारों पर विद्यार्थियों के 'दृश्य पठन' (sight reading) के लिए सामान्य 'दृश्य शब्द' (sight words), नाम चार्ट, कक्षा की चीज़ों के लेबल और प्रश्नवाचक शब्दों वाला एक चार्ट भी प्रदर्शित किया। विद्यार्थियों को नियमित रूप से इन शब्दों / वाक्यांशों को पढ़ने और अपनी नोटबुक में उतारने / लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था।

अक्षर और उसकी ध्वनि के बीच का सम्बन्ध विकसित करना

हर हफ़्ते तीन से चार अक्षर लिए जाते थे, और हर अक्षर के साथ कुछ बुनियादी शब्द (मसलन, b से bus, ball, bat और bag) सिखाए जाते थे। विद्यार्थियों का ध्यान अक्षरों की ध्वनि पर केन्द्रित करने के लिए विभिन्न तरीक़े अपनाए गए। इनमें पहली ध्वनि की पहचान करना, उस ध्वनि से शुरू होने वाले अन्य शब्दों की एक सूची बनाना, और पहले अक्षर पर विशेष

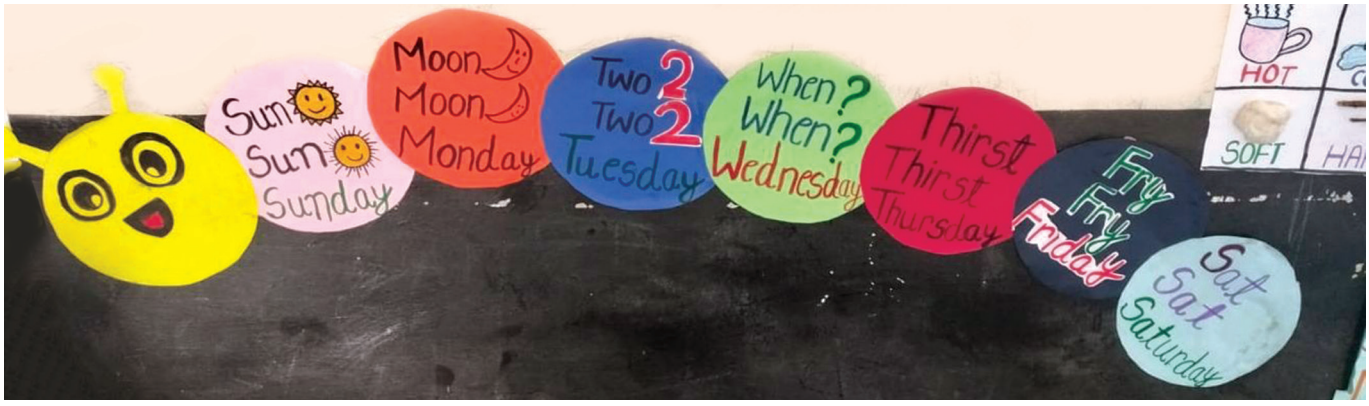

चित्र 5 : कक्षा में 'दृश्य शब्द'

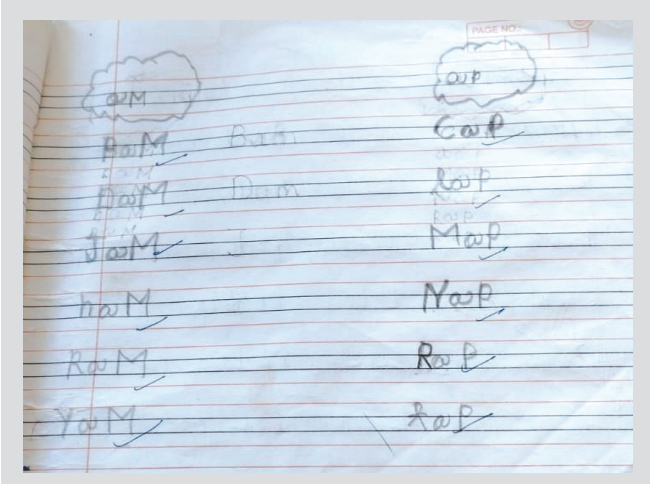

चित्र 6 : अक्षर-ध्वनि मेल और व्यंजन स्वर व्यंजन (CVC) शब्द समूहों का अभ्यास

रूप से ध्यान देना शामिल था। विद्यार्थियों ने उन दृश्य शब्दों के ज़रिए भी अक्षर और उसकी ध्वनि के बीच के सम्बन्ध को समझा जो उन्होंने सीखे थे। इनमें से कुछ शब्द उन कविताओं / कहानियों से भी लिए गए थे जो उन्हें सुनाई और समझाई गई थीं। शिक्षिका के अनुसार, कुछ अक्षरों की ध्वनि पर चर्चा करने के बाद, विद्यार्थी अकसर दूसरे अक्षरों की ध्वनि ख़ुद ही पहचान लेते थे। उदाहरण के लिए, वे अनुमान लगा सकते हैं कि अक्षर 't' की ध्वनि /t/ होती है।

शब्दावली कोना बनाना

जैसे-जैसे नए अक्षर सिखाए गए, वैसे-वैसे एक 'शब्दावली कोना' (vocabulary corner) भी बनाया गया। इसमें सभी अक्षरों से जुड़े शब्द शामिल थे। कक्षा में शब्दावली से सम्बन्धित अन्य लिखित सामग्री के अलावा, इस कोने ने विद्यार्थियों की उन शब्दों को दोहराने में मदद की जो उन्होंने सीखे थे। इसके अलावा, इससे शिक्षिका को भी यह अवसर मिला कि वे दीवार पर लिखे शब्दों के उदाहरण देकर विद्यार्थियों का ध्यान किसी ख़ास अक्षर और उसकी ध्वनि के सम्बन्ध की ओर आकर्षित कर सकें।

अक्षर लिखना

जैसे-जैसे विद्यार्थियों में किसी अक्षर और उससे जुड़ी ध्वनि की समझ विकसित हुई, वैसे-वैसे उन्हें उन्हीं अक्षरों को पत्थरों से, चॉक से, हवा में और अपनी नोटबुक में लिखने, ट्रेस करने या बनाने के लिए भी प्रोत्साहित किया गया। उन्होंने अपनी नोटबुक में उन अक्षरों से बनने वाले शब्दों की वर्तनी भी उतारीं, साथ ही उन शब्दों से जुड़ी चीज़ों के चित्र भी बनाए। इस बात पर ख़ास ध्यान दिया गया कि वे अक्षरों को उनसे सम्बन्धित ध्वनियों के साथ पहचान सकें। अक्षरों को पहचानने की प्रक्रिया की ही तरह, उन्हें लिखने के दौरान भी अक्षर के दोनों रूपों (छोटे और बड़े [small and capital]) का अभ्यास करवाया गया।

आसान शब्दों के साथ पढ़ने का अभ्यास

जब विद्यार्थियों को अक्षर-ध्वनि के मेल (व्यंजन और स्वर) की कुछ समझ हो गई तो उन्हें पाठ्यपुस्तक के पाठों, कक्षा के चार्ट और CVC शब्दों के अक्षरों से जुड़ी ध्वनियों को जोड़कर छोटे-छोटे शब्दों को ख़ुद से पढ़ने के लिए बढ़ावा दिया गया। जब वे पढ़ने की कोशिश कर रहे थे तो शिक्षिका उनका ध्यान अक्षरों की ध्वनियों की ओर खींचती रहीं। इसके अलावा, विद्यार्थियों को आसान स्पेलिंग बनाने के लिए अक्षरों के फ़्लैश कार्ड दिए गए।

आकलन

इस पूरी प्रक्रिया के दौरान, आकलन का काम लगातार जारी रहा। लगभग हर हफ़्ते कक्षा में आकलन करने के लिए वर्कशीट दी जाती थीं ताकि यह देखा जा सके कि विद्यार्थी लक्षित अक्षर-ध्वनि के मेल और दृश्य शब्दावली को सीख पा रहे हैं या नहीं। वर्कशीट के माध्यम से हर विद्यार्थी के पढ़ने की क्षमता के बारे में जानकारी और फ़ीडबैक मिल जाता था।

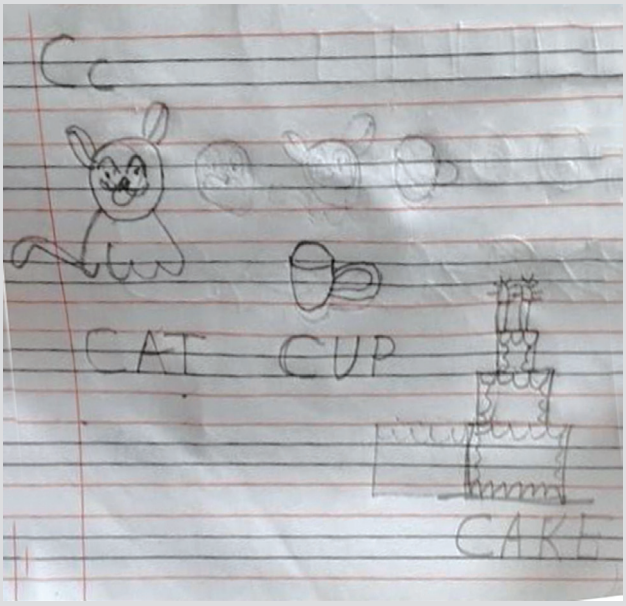

चित्र 7 : 'C' और 'A' वर्णों से नए शब्द व उनके चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहन

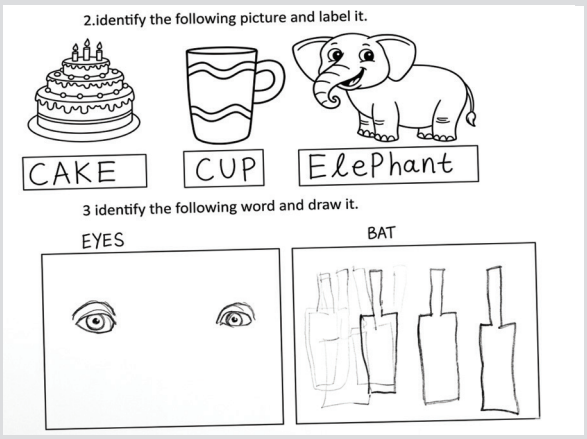

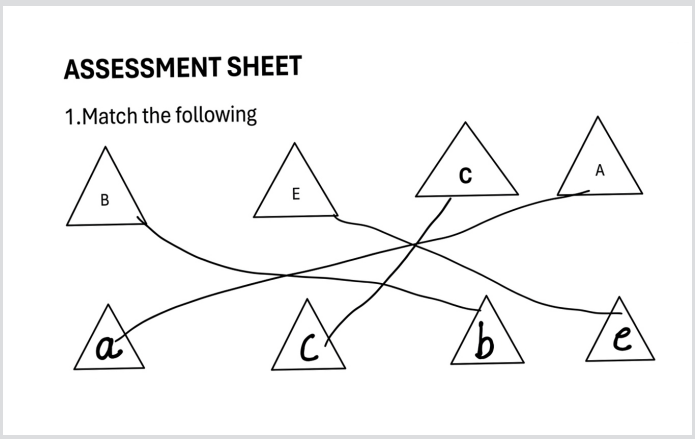

चित्र 8 : चित्रों की पहचान व लेबलिंग के आकलन के लिए वर्कशीट के कुछ उदाहरण

वाक्यों में शब्दावली का अभ्यास

अक्षरों की ध्वनि पहचानने और साक्षरता पर जो काम किया जा रहा था, उसे बातचीत की कुशलता के साथ सही तरह से बनाए रखने के प्रयास किए गए। इसके लिए कक्षा में अँग्रेज़ी के मौखिक उपयोग का अभ्यास करवाने के साथ-साथ, शिक्षिका ने विद्यार्थियों को कुछ ख़ास और सरल वाक्य संरचनाओं से भी परिचित करवाया—जैसे 'I am…', 'This is…', 'I can…'—ताकि वे सीखी हुई शब्दावली का उपयोग करके पूरे वाक्य बना सकें।

ज़रूरी बातें

1. **दोनों भाषाओं में पठन कौशल विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि विद्यार्थियों को अक्षर और उनकी ध्वनियों के बीच के मेल की अच्छी समझ हो, और वे डिकोडिंग का अभ्यास करें।** दोनों ही कक्षाओं में, शिक्षिका यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त समय दिया और प्रयास किया कि विद्यार्थी अक्षरों की आकृति को पहचानें, और उनसे जुड़ी ध्वनियों को भली-भाँति समझें।
2. **अक्षर-ध्वनि मेल और पढ़ने का अभ्यास हमेशा सन्दर्भ-आधारित नहीं होता।** शुरुआती कक्षाओं में पढ़ने के कौशल विकसित करने के लिए दोनों शिक्षकों ने अक्षर-ध्वनि मेल, डिकोडिंग और पढ़ने का अभ्यास कराने के लिए सन्दर्भ-आधारित शब्दों और पाठों से आगे बढ़कर प्रयास किया। उदाहरण के लिए, हिन्दी शिक्षिका ने शब्दों की ध्वनियों का अभ्यास कराने के लिए कुछ शब्दों में मात्राएँ जोड़ीं।
3. **R2 में मौखिक भाषा के विकास पर ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत होती है, क्योंकि इस भाषा के साथ सम्पर्क अपेक्षाकृत कम होता है। हालाँकि, R1 और R2 में पढ़ने की कुशलता के लिए मौखिक समझ का एक निश्चित स्तर अनिवार्य है।** इसके लिए हिन्दी शिक्षिका सुनिश्चित करती हैं कि विद्यार्थी पढ़ना शुरू करने से पहले, सरल हिन्दी कविताओं, कहानियों और

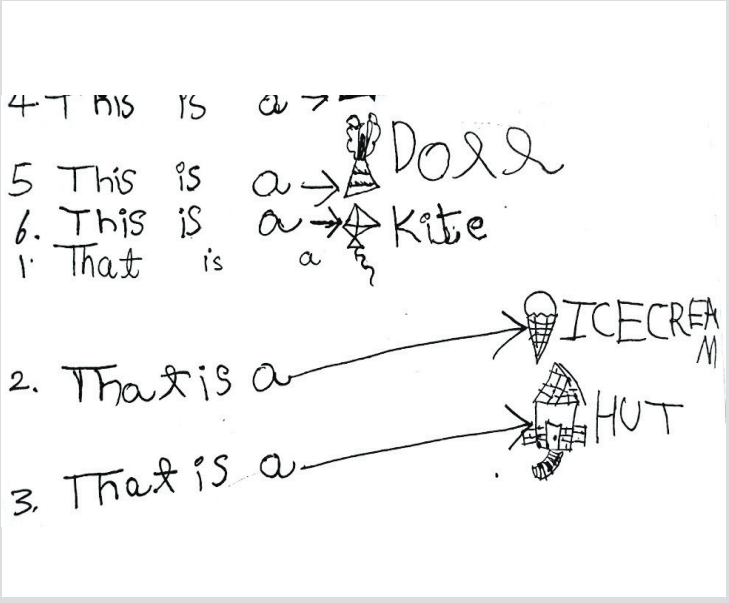

चित्र 9 : वाक्य संरचनाओं का अभ्यास

दैनिक बातचीत का उपयोग करने में सहज महसूस करें। वहीं अँग्रेज़ी शिक्षिका पाठ योजना में अँग्रेज़ी में मौखिक प्रवाह को बेहतर बनाने के लिए प्रासंगिक मुद्दों को शामिल करती हैं।

4. **'दृश्य शब्दावली' (साइट वोकैबुलरी) विद्यार्थियों को अँग्रेज़ी भाषा समझने और पढ़ने की क्षमता विकसित करने में सहायता करती है।** अँग्रेज़ी भाषा में अक्षर-ध्वनि के मेल के सीधे-सादे नियमों से अलग, कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं जो बहुत ही बुनियादी शब्दों में भी पाए जाते हैं। जैसे—friend, great, daughter, आदि। ऐसे शब्दों को तेज़ी और आसानी से पढ़ना, पढ़ने की गति एवं प्रवाह को बेहतर बनाने के लिए ज़रूरी है।

5. **R2 स्तर पर पढ़ने की समझ (reading comprehension) का विकास थोड़ी देर से होता है। हालाँकि, डिकोडिंग की क्षमता और पहले से पढ़े हुए, जाने-पहचाने पाठों को पढ़ने में शुरुआती दौर में मिलने वाली सफलता, विद्यार्थियों को आगे चलकर पढ़ने की समझ विकसित करने में काफ़ी मददगार साबित होती है।** अँग्रेज़ी की कक्षा में विद्यार्थी कुछ दृश्य शब्दों और अक्षर-ध्वनि के बीच के मेल की जानकारी के आधार पर पाठों को डिकोड करने में सक्षम हो जाते हैं। लेकिन वे अपरिचित पाठों को प्रवाह के साथ डिकोड करने या उनका अर्थ समझने में पूरी तरह से सक्षम नहीं होते हैं।

इस बात को ध्यान में रखते हुए, *फ़ाउण्डेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-FS)* R1 और R2 के विद्यार्थियों के लिए सीखने के विभिन्न स्तरों के लक्ष्यों को निर्धारित करती है। जहाँ R1 में विद्यार्थियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे छोटे गद्यांशों को आसानी से और समझ के साथ पढ़ सकें, वहीं R2 में उनसे यह उम्मीद होती है कि वे कई अक्षरों वाले शब्दों को पढ़ सकें, तथा पढ़ने, लिखने और शब्द बनाने के लिए अक्षर-ध्वनि मेल और दृश्य शब्दावली का उपयोग कर सकें।

इन दोनों कक्षाओं में सीखने का आकलन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया के रूप में हो रहा था। हिन्दी शिक्षिका प्रत्येक विद्यार्थी को व्यक्तिगत रूप से पढ़ने के लिए बुलाती थीं। वे ध्यान देती थीं कि वे कैसे पढ़ रहे हैं। इससे यह समझने में मदद मिलती थी कि किन विशेष अक्षरों, मात्राओं या संयुक्ताक्षरों को पढ़ने में मुश्किल हो रही है। दूसरी ओर, अँग्रेज़ी की शिक्षिका इस प्रकार के अवलोकन के साथ-साथ एक साप्ताहिक आकलन शीट का भी उपयोग करती थीं।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

i. एनसीएफ़–एसई के अनुसार, R1 वह भाषा है जिसका उपयोग शिक्षा के माध्यम के रूप में किया जाता है, और जिसमें सबसे पहले साक्षरता प्राप्त की जाती है (राजस्थान के सन्दर्भ में हिन्दी); और R2 कोई भी अन्य भाषा हो सकती है जिसे विद्यार्थी फ़ाउण्डेशनल स्टेज में सीखना शुरू करते हैं (राजस्थान के सन्दर्भ में अँग्रेज़ी)। (पेज़ 239 बॉक्स 2.4i)

ii. CVC गद्यांश पढ़ने की छोटी–छोटी रचनाएँ होती हैं। इन्हें शुरुआती पाठकों के लिए बनाया गया है, और इनमें व्यंजन–स्वर–व्यंजन (Consonant–Vowel–Consonant —CVC) शब्दों का भरपूर इस्तेमाल होता है। इन गद्यांशों का उपयोग सरल और समझने में आसान शब्दों—जैसे कि cat, dog, map और sit—को मिलाकर सार्थक वाक्य बनाने, और उनके ज़रिए फीनिक्स, शब्दों को जोड़ने (blending) और पढ़ने के प्रवाह (fluency) का अभ्यास करने के लिए किया जाता है।

आकाश शांडिल्य, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, चित्तौड़गढ़, राजस्थान में कार्यरत हैं। वे विशेष रूप से अँग्रेज़ी भाषा में काम करते हैं, और विषय से सम्बन्धित सामग्री विकसित करने में सहयोग देते हैं।

सम्पर्क : akash.shandilya@azimpremjifoundation.org